पुस्तक सूची
2018

गार्गी प्रकाशन

जनपक्षधर एवं प्रगतिशील साहित्य

www.gargibooks.com

परिचय

गार्गी प्रकाशन अपने पाठकों को कम मूल्य पर ऐसा स्तरीय और सुरुचिपूर्ण साहित्य उपलब्ध कराने का प्रयास करता है जो जनता में न्याय, समानता और एक बेहतर जीवन के लिए संघर्ष की भावना उत्पन्न करे। आज देश और दुनिया के पैमाने पर जनविरोप्राी और मानवद्वेषी मूल्यों, मान्यताओं और संस्कृति के घटाटोप में यह प्रकाशन जीवन और समाज के लिए सार्थक और उपयोगी संस्कृति के बीजारोपण की चेष्टा करता है। खासकर वह विश्व साहित्य की ऐसी अनुपम और कालजयी कृतियों को हिन्दी पाठकों के लिए प्रस्तुत करता है जो मानवता के एक बेहतर भविष्य के लिए उनमें आशा और उत्साह का संचार करें।
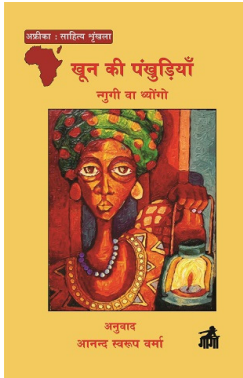
नयी प्रस्तुति

प्रथम संस्करणः 2018
आकार : डिमाई/8,
पृष्ठ : 450
मूल्यः रु. 300.00

ISBN : 81-87772-37-9

खून की पंखुड़ियाँ

न्गुगी वा थ्योंगो

अनुवाद : आनन्द स्वरूप वर्मा

'खून की पंखुड़ियाँ' की रचना प्रक्रिया के बारे में जिक्र करते हुए न्गुगी ने अपने निबन्ध संग्रह 'राइटर्स इन पॉलिटिक्स' में एक जगह लिखा है-- ''इस उपन्यास के लेखन के दौरान यह देख कर मैं हतप्रभ रह गया कि केन्या की गरीबी की वजह कोई अन्दरूनी नहीं है-- यह इसलिए गरीब है क्योंकि यहाँ की सारी सम्पदा का इस्तेमाल पश्चिमी जगत के विकास में हो रहा है। ...पश्चिम जर्मनी, फ्रांस, ब्रिटेन, जापान और अमरीका द्वारा एक यूनिट पूँजी निवेश के बदले में साम्राज्यवादी बुर्जुआ हमारे यहाँ से दस यूनिट सम्पदा अपने देशों को ले जाता है। ... इसमें मैं यही दिखाना चाहता था कि साम्राज्यवाद कभी भी हम केन्याइयों का या हमारे देश का विकास नहीं कर सकता। ऐसा करते समय मैंने भरसक केन्या के मजदूरों और किसानों की इस अनुभूति के प्रति ईमानदार रहने की कोशिश की जिसे उन्होंने 1895 से ही अपने संघर्षों के जरिये प्रदर्शित किया है।''

पत्थरों का देश

अलेक्स ला गुमा

अनुवाद : आनन्द स्वरूप वर्मा

अलेक्स ला गुमा का यह उपन्यास "पत्थरों का देश" 1967 में प्रकाशित हुआ और अपने शीर्षक के अनुरूप ही इसने रंगभेद और नस्ली उत्पीड़न का दंश झेल रहे दक्षिण अफ्रीका की एक तस्वीर प्रस्तुत की।

अलेक्स ला गुमा का यह उपन्यास दक्षिण अफ्रीका के उस दौर का चित्रण करता है जब दुनिया की अत्यन्त बर्बर व्यवस्था यानी रंगभेद नीति की चपेट में दक्षिण अफ्रीका पड़ा हुआ था। 1948 में नेशनल पार्टी ने वहाँ सत्ता सम्भाली थी और उसने "काले खतरे" को समाप्त करने के वायदे के साथ रंगभेद नीति को आधिकारिक तौर पर लागू किया। फासीवाद की पोषक इस पार्टी ने सत्ता में आते ही ऐसे बेशुमार कानून बनाये जो देश की कुल आबादी के पाँचवें हिस्से-- मुट्ठीभर गोरों के हित में हों...
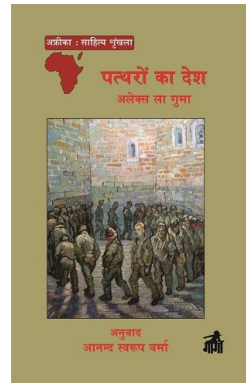
नयी प्रस्तुति

प्रथम संस्करणः 2018
आकार : डिमाई/8,
पृष्ठ : 212
मूल्यः रु. 120.00

ISBN : 81-87772-34-4
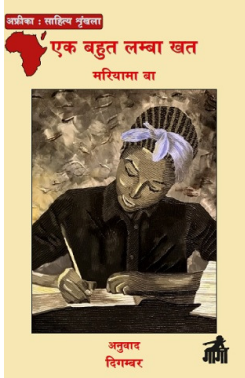
नयी प्रस्तुति
प्रथम संस्करणः 2018
आकार : डिमाई/8,
पृष्ठ : 96
मूल्यः रु. 60.00
ISBN : 81-87772-27-1

एक बहुत लम्बा खत

मरियामा बा

अनुवाद : दिगम्बर

मरीयामा बा का यह लघु उपन्यास 'सो लॉन्ग अ लेटर' एक लम्बे पत्र की शैली में लिखा गया है। उपनिवेशवादी दौर में महिलाओं की स्थिति इस लघु उपन्यास के केन्द्र में है जो स्वाधीनता प्राप्ति के बाद सेनेगल के समाज में अपनी आजादी और बराबरी के लिए जद्दोजहद करती हैं। 1980 में इसके प्रकाशन के बाद इसे पाठकों की भरपूर सराहना मिली। अफ्रीकी साहित्य जगत में और खासकर नारीवादी लेखन के क्षेत्र में इसने काफी ख्याति अर्जित की। 1980 में ही इसे अफ्रीकी साहित्य का प्रतिष्ठित नोमा पुरस्कार प्राप्त हुआ।

परम्परा और आधुनिकता का विरोधाभास, पितृसत्ता और बहुविवाह जैसी कुप्रथाओं का कायम रहना, कामकाजी औरतों पर नौकरी, गृहस्थी और रूढ़िवादी जिम्मेदारियों का तिहरा बोझ, इन सब का सजीव चित्रण इसमें किया गया है।

अफ्रीकी कहानियाँ-1

अनुवाद और सम्पादन : आनन्द स्वरूप वर्मा

किसी भी देश के साहित्य को तभी समझा जा सकता है, जब वहाँ के राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन की थोड़ी-बहुत जानकारी हो। कहानियों या कविताओं के मात्र अनुवाद पढ़ने से जो सुख मिलता है, वह उस समय और ज्यादा बढ़ सकता है अगर हमें इन देशों के बारे में जानकारी हो। यही वजह है कि प्रस्तुत संकलन में हर देश की कहानी से पूर्व उन देशों के राजनीतिक और सांस्कृतिक परिदृश्य पर अत्यन्त संक्षिप्त टिप्पणियाँ दी गयी हैं। यह दावे के साथ कहा जा सकता है कि जिन रचनाकारों को इसमें शामिल किया गया है, वे अपने-अपने देशों में काफी प्रतिष्ठित हैं और उनके माध्यम से अफ्रीकी साहित्य के विशाल भंडार की एक झलक मिल जाती है।
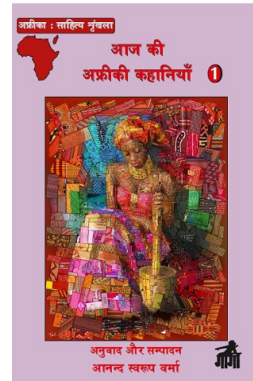
नयी प्रस्तुति
प्रथम संस्करणः 2018
आकार : डिमाई/8,
पृष्ठ : 212
मूल्यः रु. 120.00
ISBN : 81-87772-35-2
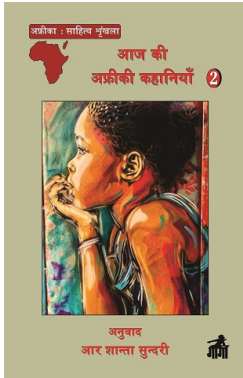
अफ्रीकी कहानियाँ-2

अनुवाद : आर शान्ता सुन्दरी

इस संग्रह में चिनुआ अचेबे और न्गुगी वा थ्योंगो जैसे सुप्रसिद्ध अफ्रीकी लेखकों के साथ एग्नेस एनिया, कुनले शिट्टू जैसे युवा लेखकों तक की कहानियों को अनुवाद के लिए लिया गया है। इस तरह अफ्रीकी साहित्य में क्रमिक विकास एवं परिवर्तन को दिखाने का प्रयत्न किया गया है। इसी तरह अफ्रीकी महाद्वीप के विभिन्न देशों से कहानियाँ चुनी गयीं।

कुल मिलाकर अफ्रीकी कहानियों में शोषितों और पीड़ितों की दुर्दशा का चित्रण मिलता है। गरीबी, निरक्षरता, रिश्वतखोरी, शासकों द्वारा किये जाने वाले अत्याचार, स्त्रियों की दयनीय स्थिति आदि इन कहानियों के मुख्य विषय हैं। जिन्दगी से और अनुभवों से निकलती ये कहानियाँ मर्म को छू लेती हैं।

नयी प्रस्तुति

प्रथम संस्करणः 2018
आकार : डिमाई/8,
पृष्ठ : 88
मूल्यः रु. 50.00
ISBN : 81-87772-36-0

बुद्धिजीवी का दायित्व

प्रस्तुत संकलन में रूसी लेखक मक्सिम गोर्की, ब्रिटिश चिंतक बर्ट्रेंड रसेल और इटली के मार्क्सवादी दार्शनिक अन्तोनियो ग्राम्शी के विचारों के साथ मौजूदा दौर की विसंगतियों पर पैनी नजर रखने वाले विचारकों एडवर्ड सईद, पॉल बरान, जेम्स पेट्रास और माइकल डी येट्स के लेखों को शामिल किया गया है। निश्चय ही आज के कठिन समय में बुद्धिजीवियों की भूमिका और उनके दायित्व को समझने में यह संकलन उपयोगी साबित होगा।

समग्र रूप से बुद्धिजीवियों की भूमिका पर चर्चा करते समय हम देखते हैं कि हमारे पास एक ऐसा भी उदाहरण है "जो संभवतः एकमात्र है" जहाँ बुद्धिजीवियों ने पहले सांस्कृतिक संगठनों की नींव रखी और उन्हीं सांस्कृतिक संगठनों का आगे चलकर मुक्ति आन्दोलनों में विकास हुआ और इन आन्दोलनों ने अपने-अपने देशों को औपनिवेशिक गुलामी से मुक्त कराया।...
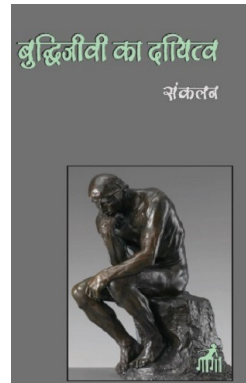
नयी प्रस्तुति

प्रथम संस्करणः 2018
आकार : डिमाई/8,
पृष्ठ : 108
मूल्यः रु. 60.00
ISBN : 81-87772-64-6
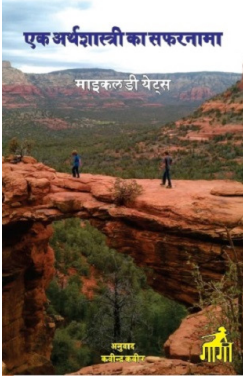
एक अर्थशास्त्री का सफरनामा

माइकल डी येट्स

अनुवाद : कवीन्द्र कबीर

यह ऐसी किताब है जिसकी बातें इस मानवद्रोही राजनीतिक-आर्थिक व्यवस्था के प्रभु वर्ग के लिए अत्यन्त असुविधाजनक हैं। इसमें आप सुन्दर-सुन्दर प्राकृतिक दृश्यों के चित्र देखेंगे, लेकिन ऐसे दृश्य भी दिखाई देंगे जिनको यात्रा-वृत्तान्त की किताबों में अस्पर्शनीय माना जाता है, यानी असली अमरीका की बीभत्स तस्वीर -- हाशिये पर फेंक दिये गये लोग, भयावह गरीबी, कम मजदूरी पर गुजारा करते हाड़तोड़ मेहनत करने वाले मजदूर, गृह-ऋण बुलबुला फटने के बाद मध्यम वर्ग की दुर्दशा, दिनोंदिन बढ़ती गैर-बराबरी और पर्यावरण की बेइन्तहा तबाही। और सबसे बढ़कर अमरीका के मूल निवासी इंडियन्स के इतिहास के अवशेषों और स्मृति-चिन्हों का घूम-घूमकर जुटाया गया प्रत्यक्ष साक्ष्य है...

नयी प्रस्तुति

प्रथम संस्करणः 2018
आकार : डिमाई/8,
पृष्ठ : 108
मूल्यः रु. 60.00
ISBN : 81-87772-62-X

डॉ. कोटनिस की स्मृति में

शङ श्येनकुङ, लू चीशन, चाङ छाङमान

यह किताब डॉ. द्वारकानाथ शान्ताराम कोटनिस (1910-42) के जीवन पर आधारित है जो सितम्बर 1938 में, जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध में चीनी जनता की सहायता करने के लिए भारतीय मेडिकल मिशन में शामिल हुए थे। फरवरी 1939 में वे येनान पहुँचे और इसके बाद जापान-विरोधी युद्ध के मोर्चे पर पहुँचे। जनवरी 1941 में वे नॉर्मन बेथ्यून अन्तरराष्ट्रीय शान्ति अस्पताल के निदेशक नियुक्त हुए। 9 दिसम्बर 1942 को उनका देहान्त हपेइ प्रान्त की थाङश्येन काउन्टी में हुआ।

डॉ. कोटनिस का नाम और उनके कार्य विश्वबन्धुत्व की शानदार मिसाल हैं। उनका बलिदान चीनी और भारतीय जनता की मैत्री के इतिहास को रोशन करता रहेगा।
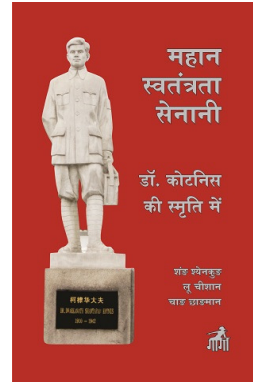
नयी प्रस्तुति

प्रथम संस्करणः 2018
आकार : डिमाई/8,
पृष्ठ : 160
मूल्यः रु. 80.00
ISBN : 81-87772-49-2
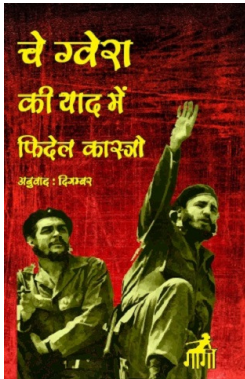
नयी प्रस्तुति

प्रथम संस्करणः 2018

आकार : डिमाई/8,

पृष्ठ : 108

मूल्यः रु. 60.00

ISBN : 81-87772-67-0

चे ग्वेरा की याद में

फिदेल कास्त्रो

अनुवाद : दिगम्बर

इस संकलन में चे की याद में विभिन्न अवसरों पर दिये गये भाषण हैं, जिनमें क्यूबा की क्रान्ति में उनके योगदान का सजीव चित्रण है। इसके अलावा एक क्रान्तिकारी के रूप में चे के व्यक्तित्व की विशेषताओं को ठोस घटनाओं के माध्यम से बताया गया है। अलग-अलग छवियों और दृश्यों को अगर एकत्रित किया जाये तो चे के क्रान्तिकारी जीवन की एक मुकम्मिल तस्वीर हमारे सामने आ जाती है। विभिन्न राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय मुद्दों पर चे की राजनीतिक समझ और अवस्थिति को भी इसमें यथास्थान प्रस्तुत किया गया है। एक पत्रकार को दिये गये इन्टरव्यू का अंश सबसे महत्त्वपूर्ण है जिसमें फिदेल ने समाजवादी खेमे में वैचारिक भटकाव और विवरण पर चे की राय के माध्यम से अपना रुख स्पष्ट किया है।

जनाब कोएनर की कहानियाँ

बर्तोल्त ब्रेख्त

अनुवाद : दिगम्बर

सूक्ति या कहावतों की शैली में लिखे ये छोटे-छोटे गल्प के टुकड़े ब्रेख्त की गद्य शैली के अनोखे नमूने हैं। अधिकांश रचनाएँ आधे पन्ने की या उससे भी छोटी, यहाँ तक कि एक या दो वाक्य की भी हैं जो नावक के तीर की तरह प्रभावकारी हैं। सीधी सपाट बातें करने के बजाय इनमें शब्दाडम्बर का प्रयोग किया गया है और कोई अन्तिम निष्कर्ष प्रस्तुत करने की जगह पाठकों को उधेड़बुन और विचार-विमर्श की मनःस्थिति में ला देने का प्रयास किया गया है। इन कहानियों में राजनीति के अलावा रोजमर्रे की जिन्दगी, सच्चाई, प्रेम, ईश्वर, देश निकाला, मानव स्वभाव, सत्ता का आतंक और जनता की आशा-आकांक्षा का भरपूर चित्रण हुआ है।

नयी प्रस्तुति

प्रथम संस्करणः 2018

आकार : डिमाई/8,

पृष्ठ : 116

मूल्यः रु. 60.00

ISBN : 81-87772-46-8
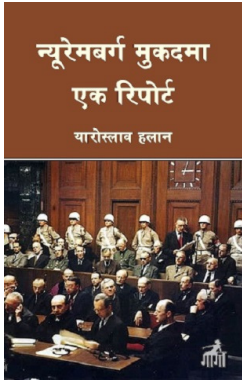
नयी प्रस्तुति
प्रथम संस्करणः 2018
आकार : डिमाई/8,
पृष्ठ : 96
मूल्यः रु. 50.00
ISBN : 81-87772-47-6

न्यूरेमबर्ग मुकदमा
(एक रिपोर्ट)
यारोस्लाव हलान

हलान ने, 1945-46 में नाजी जर्मनी के मुख्य युद्ध अपराधियों के न्यूरेमबर्ग मुकदमे में सोवियत-यूक्रेनी प्रेस का प्रतिनिधित्व किया। इसके साथ ही उन्होंने अनेकों यूरोपीय देशों की यात्रा की और फासीवाद के विरुद्ध विश्व संघर्ष और एक नये युद्ध के खतरे का वर्णन करते हुए, पुस्तिकाओं और रिपोर्टों की एक पूर्ण शृंखला में अपने अनुभवों को लिपिबद्ध किया।

इस संग्रह की रिपोर्टें लगभग आधी सदी पूर्व लिखी गयी थीं, लेकिन आज के पढ़ने वालों के लिए उनका सन्देश हमेशा की भाँति इस समय भी प्रासंगिक है।

नयी पीढ़ी के लिए
गोर्की, लू शुन, प्रेमचन्द
राणा प्रताप

गोर्की और लू शुन के बीच तो अत्यधिक निकटता भी बन गयी थी। जीवन के अंतिम दौर में लू शुन जब गम्भीर रूप से बीमार पड़े, गोर्की ने लू शुन को रूस में आकर इलाज कराने की सलाह दी। लेकिन उन्होंने नहीं माना। उनका उत्तर था, "जब दूसरे लड़ रहे हैं, प्राणों की आहुति दे रहे हैं, मैं चारपाई में पड़कर आराम नहीं कर सकता। काम करते हुए कुछ बरस जीना, बिना काम करते हुए अधिक जीने से बेहतर है।"

जनता के प्रति यह जो प्यार है, वह गोर्की, लू शुन और प्रेमचन्द तीनों ही लेखकों में समान रूप से देखने को मिलता है। संघर्ष से जूझती, उत्पीड़न और शोषण के विरुद्ध लड़ती और दमनचक्र के खिलाफ जोरदार प्रतिरोध खड़ा करती जनता किन अग्रगामी लेखकों को प्रिय न होगी?
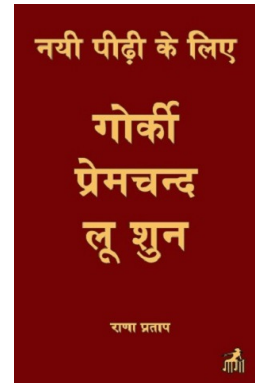
नयी प्रस्तुति
प्रथम संस्करणः 2018
आकार : डिमाई/8,
पृष्ठ : 168
मूल्यः रु. 80.00
ISBN : 81-87772-63-8

नयी प्रस्तुति
प्रथम संस्करणः 2018
आकार : डिमाई/8,
पृष्ठ : 80
मूल्यः रु. 40.00
ISBN:81-87772-66-2
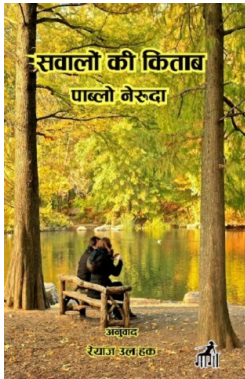
सवालों की किताब

पाब्लो नेरूदा

अनुवाद : रेयाज उल हक

सवालों की किताब को एक नये नजरिये से देखा जाना चाहिए। बच्चों की मासूमियत और बड़ी उम्र के तजुर्बे को एक साथ पिरोने वाले इसमें ऐसे सवाल दिये गये हैं जो सुलझाए जाने के लिए नहीं बने हैं। ये बने बनाये इकहरे जवाबों की तानाशाही को खारिज करते हैं और कल्पना और सपनों की एक नयी रंग-बिरंगी दुनिया की हिमायत करते हैं। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि ये सवाल अबूझ हैं और न ही इसका मतलब यह है कि इनमें कोई आध्यात्मिक अटकल छिपी है। हमारे आसपास की दुनिया से लिये गये बिम्बों और जानी-पहचानी चीजों को लेकर बनायी गयी ये कविताएँ किसी आध्यात्मिक अटकल के लिए कोई जगह नहीं छोड़तीं। वे बस इसकी गुजारिश करती हैं कि सवालों पर नये सिरे से सोचा जाये और जवाब तक पहुँचने के बने बनाये रास्तों की आदत को छोड़ा जाये।

किस्सों का शिकारी

एदुआर्दो गालेआनो

अनुवाद : रेयाज उल हक

अपनी इस अन्तिम किताब को लिखते वक्त गालेआनो शायद मौत की आहटों को सुनने की कोशिश कर रहे थे। कम से कम वे इस पर सोच जरूर रहे थे, क्योंकि इस किताब में मौत के विषय पर कई सारी कहानियाँ हैं, जिनमें से एक को आखिर में रखा गया है। इस रंग-बिरंगी दुनिया से, जिसकी विविधता पर उन्हें फख्र भी था और जिसकी ख्वाहिश भी, विदा लेते हुए वे कई जगह पलट कर अपने जीवन पर गौर करते हुए लगते हैं।

अपने आखिरी वक्त तक वह अपने अवाम के साथ खड़े रहे, उनके हक में बोलते रहे। एक ऐसे वक्त में, जब लोकतंत्र, बराबरी, और इनसानी गरिमा पर चौतरफा हमले हो रहे हैं, गालेआनो हमेशा से ज्यादा आज एक प्रासंगिक लेखक बन जाते हैं।
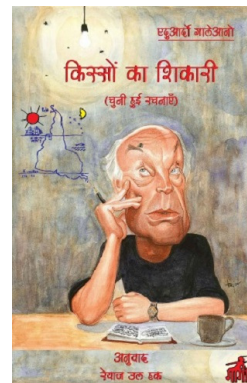
नयी प्रस्तुति
प्रथम संस्करणः 2018
आकार : डिमाई/8,
पृष्ठ : 40
मूल्यः रु. 25.00
ISBN:81-87772-65-4

निगरानी पूँजीवाद

जॉन बेलामी फोस्टर, रॉबर्ट डब्ल्यू मैक्चेस्नी

अनुवाद : कुमार सुशील

इस किताब का एक अंश-- निजी जिन्दगी सम्बन्धी जानकारियों पर खतरा लगातार बढ़ रहा है, यहाँ तक कि बहुत सारे अमरीकी नागरिक इस बात से अनभिज्ञ हैं कि सरकारी एजेंसियाँ तथा प्राइवेट कम्पनियाँ नागरिकों की निजी जिन्दगी से सम्बन्धित गतिविधियों को कम्प्यूटर तथा माइक्रो फिल्म तकनीक की सहायता से एकत्रित, संग्रहित और आपस में साझा कर रही हैं। शायद ही कोई दिन होगा जब किसी नये डाटा का खुलासा न होता हो... जरा अमरीकी फौज के सूचना इकट्ठा करने वाले कार्यकलाप को देखिए। इस साल की शुरुआत में पता चला कि फौजी गुप्तचर विभाग काफी समय से बहुत सारे संगठनों की कानूनी राजनैतिक गतिविधियों पर योजनाबद्ध तरीके से निगरानी रख रहा था...

नयी प्रस्तुति

प्रथम संस्करणः 2018

आकार : डिमाई/8,

पृष्ठ : 36

मूल्यः रु. 20.00

ISBN: 81-87772-74-3

मनुष्य की भौतिक सम्पदाएँ

लियो ह्यूबरमन

इस पुस्तक के दो उद्देश्य हैं। यह इतिहास की आर्थिक सिद्धान्त और आर्थिक सिद्धान्त की इतिहास के माध्यम से व्याख्या का एक प्रयास है। यह परस्पर सम्बन्ध महत्त्वपूर्ण और आवश्यक है। इतिहास का अध्ययन अधूरा है, यदि उसके आर्थिक पहलुओं की ओर कम ध्यान दिया जाये और आर्थिक सिद्धान्त तब नीरस लगते हैं, जब उन्हें उनकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से अलग कर दिया जाता है। राजनीतिक अर्थशास्त्र राजनीतिक ही रहेगा, जब तक कि इसका अध्ययन-अध्यापन ऐतिहासिक शून्यता में किया जायेगा। रिकार्डो का भूमि-शुल्क सिद्धान्त अपने आप में कठिन और नीरस है। लेकिन इसे इसके ऐतिहासिक प्रसंग में रखकर देखिये, इसे उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के इंग्लैण्ड के भू-स्वामियों और उद्योगपतियों में संघर्ष के रूप में देखिये और यह कितना उत्तेजक और अर्थपूर्ण हो जाता है।
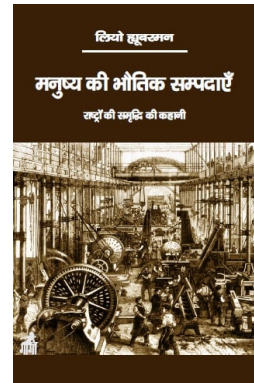
प्रथम संस्करणः 1996

नवीन संस्करणः 2018

आकार : डिमाई/8,

पृष्ठ : 368

मूल्यः रु. 120.00

ISBN: 81-87772-02-6

प्रथम संस्करणः 2016
आकार : डिमाई/8,
पृष्ठ : 144
मूल्यः रु. 80.00
ISBN : 81-87772-43-3

साम्राज्यवाद आज

(मंथली रिव्यू के लेखों का संकलन)

अनुवाद : दिनेश पोसवाल

इस पुस्तक में आज के साम्राज्यवाद की विशेषताओं का वर्णन और विश्लेषण तथ्यों सहित किया गया है। शासक वर्ग और उसके बुद्धिजीवी नवउदारवाद की बेहतर छवि बनाते हैं और उसे आज के सभी आर्थिक संकट के समाधान के रूप में पेश करते हैं। लेकिन वास्तव में नवउदारवाद और कुछ नहीं आज के युग का साम्राज्यवाद है, जिसकी विशेषताओं के बारे में आज से 100 साल पहले लेनिन ने बहुत मार्के की बात बतायी थी। लेनिन की साम्राज्यवाद की थीसिस आज भी सही है लेकिन उसके स्वरूप में बदलाव आया है। लेखक इस बदलाव पर ध्यान केन्द्रित करता है और इसकी चारित्रिक विशेषताओं में से एक-- वित्तीय पूँजी के बारे में विस्तार से अपनी बात कहता है।

अन्तहीन संकट

जॉन बेलामी फोस्टर, रॉबर्ट मैक्केस्नी

अनुवाद : दिगम्बर

यह पुस्तक 2009 और 2012 के बीच लिखी गयी थी। इसके अध्याय मूलतः मंथली रिव्यू पत्रिका में प्रकाशित हुए थे, जिसके सम्पादक जॉन बेलामी फोस्टर हैं और जिसमें रॉबर्ट डब्लू मैक्केस्नी अकसर लिखा करते हैं। इस पुस्तक का एक अंश--

2007-09 के वित्तीय महासंकट का सम्बन्ध भी "वास्तविक उत्पादक अर्थव्यवस्था" में इसी मंथरता से था, जिसके लिए कुछ लोग ठहराव शब्द का प्रयोग करते हैं। चीन और मुठ्ठी भर उभरती हुई अर्थव्यवस्थाएँ हाल के वर्षों में निरन्तर विस्तारित होती रहीं, लेकिन वे भी इस आम संकट से खुद को बचा पाने में समर्थ नहीं हैं और उनमें भी ढलान की ओर खिसकने और बढ़ती अस्थिरता के लक्षण दिखाई दे रहे हैं। दिनों-दिन वैश्वीकृत होती इस अर्थव्यवस्था में शामिल विभिन्न राष्ट्रों का भाग्य एक-दूसरे से अधिकाधिक अन्तरगुम्फित होता जा रहा है।
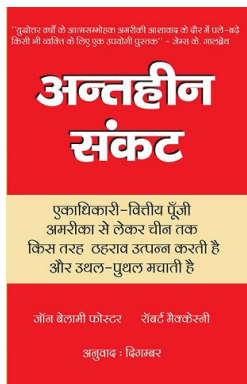
प्रथम संस्करणः 2015
आकार : डिमाई/8,
पृष्ठ : 248
मूल्यः रु. 150.00
ISBN : 81-87772-39-5
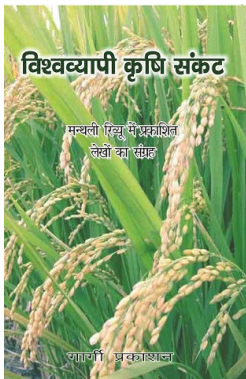
प्रथम संस्करणः 2010
नवीन संस्करणः 2018
आकार : डिमाई/8,
पृष्ठ : 100
मूल्यः रु. 50.00
ISBN : 81-87772-69-7

विश्वव्यापी कृषि संकट

(मंथली रिव्यू के लेखों का संकलन)

प्रस्तुत संकलन कृषि से सम्बन्धित संकट को समझने की दिशा में एक प्रयास है। इस संकलन के पाँच लेख मंथली रिव्यू के विशेषांक जुलाई-अगस्त 1998 से लिये गये हैं। पहला लेख कृषि में पूँजीवाद का प्रवेश और उसका विकास तथा कृषि के पूँजीवादीकरण का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करता है। पूँजीवाद ने आगे बढ़ते-बढ़ते अपनी मरणासन्न अवस्था-- साम्राज्यवाद में प्रवेश किया, जिसकी चारित्रिक विशेषता है-- एकाधिकार। कृषि क्षेत्र में भी पूँजीवाद इसी प्रक्रिया से गुजरता है और आगे चलकर कृषि भी एकाधिकारी पूँजी के अधीन हो जाती है। दूसरा लेख इसी पर केन्द्रित है। तीसरा लेख कृषि को साम्राज्यवादी पूँजी के अधीन किये जाने के कारण जमीन के अधिकार से किसानों के वंचित होने और सर्वहारा में बदलने, या जमीन का मालिक होने के बावजूद सारतः पूँजी का गुलाम होते जाने के बारे में है।...

वित्तीय महासंकट

फ्रेड मैगडॉफ, जॉन बेलामी फोस्टर

अनुवाद : दिगम्बर

यह पुस्तक दुनिया भर में चल रहे एक अभूतपूर्व, बहुआयामी और असाध्य आर्थिक संकट के बारे में है। 2007-08 में अमरीकी गृह-ऋण बुलबुले के फटने और उसके परिणामस्वरूप वहाँ का वित्तीय ढाँचा चरमारा जाने के बाद यह संकट एक-एक कर के दुनिया की सभी अर्थव्यवस्थाओं को अपनी चपेट में लेने लगा। इस संकट पर दुनिया भर में टनों साहित्य लिखे गये, लेकिन दुर्भाग्यवश हिन्दी पाठकों के लिए ऐसा साहित्य दुर्लभ है। इस विषय पर हिन्दी में शायद ही कोई पुस्तक उपलब्ध हो जो इस संकट की तह तक जाकर उसकी विवेचना करे और कोई हल भी सुझाए। यह पुस्तक *मंथली रिव्यू* के वर्तमान सम्पादकों– जॉन बेलामी फोस्टर और फ्रेड मैगडॉफ की उक्त पत्रिका में प्रकाशित निबन्धों का संकलन है जिन्हें बाद में *द ग्रेट फाइनान्शियल क्राइसिस* नाम से पुस्तकाकार प्रकाशित की गयी है।
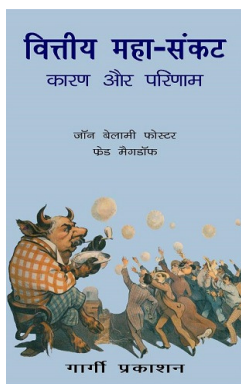
प्रथम संस्करणः 2010
नवीन संस्करणः 2018
आकार : डिमाई/8,
पृष्ठ : 152
मूल्यः रु. 80.00
ISBN : 81-87772-68-9

एक विराट जुआघर

फिदेल कास्त्रो

अनुवाद : दीप्ति

अमरीकी व्यवस्था की आधारशिला वित्तीय पूँजी है जो दिनोंदिन सटोरिया चरित्र ग्रहण करती गयी है। यही व्यवस्था अब दुनिया के सभी देशों का मॉडल बन गयी है। इसने मुट्ठी भर लोगों की समृद्धि के साथ व्यापक आबादी की कंगाली को जन्म दिया है। इसके बारे में फिदेल कहते हैं--

मौजूदा व्यवस्था टिकाऊ नहीं है, यह बात इस व्यवस्था की दुर्बलता और कमजोरी से साबित हो जाती है, जिसने इस धरती को एक विराट जुआघर में बदल दिया है, और कहीं-कहीं तो पूरे समाज को ही जुआरी बना दिया है। मुद्रा और निवेश के कार्य को इस तरह घोषित कर दिया है कि वे उत्पादन और दुनिया की सम्पदा बढ़ाने के बजाय पैसे से पैसा कमाने का जरिया बन गया है। इस तरह की विकृति विश्व अर्थव्यवस्था को तबाही की ओर ले जायेगी, यह तय है।

प्रथम संस्करणः 2014
नवीन संस्करणः 2017
आकार : डिमाई/8,
पृष्ठ : 50
मूल्यः रु. 30.00
ISBN : 81-87772-31-X

पहला अध्यापक

चिगिंज आइत्मातोव

अनुवाद : भीष्म साहनी

इस उपन्यास में जिन घटनाओं का जिक्र किया गया है, वे इस शताब्दी के तीसरे दशक में मध्य एशिया में सोवियत सत्ता के स्थापनाकाल में घटी थी। एक झलक--

“अरे आप दूइशेन को नहीं जानते। बड़े कानून.कायदे का आदमी है। अपना काम पूरा करने के बाद ही वह किसी दूसरी चीज में दिलचस्पी लेता है,” दूसरा बोला।

“साथियो मुमकिन है कि आप में से कुछ को याद हो, एक जमाना था कि हम दूइशेन के स्कूल में पढ़ा करते थे और वह खुद भी वर्णमाला के सभी अक्षर शायद ही जानता हो,” कहते हुए उसने पलकें मूँदकर सिर हिलाया। उसके चेहरे पर विस्मय और व्यंग्य की झलक थी।
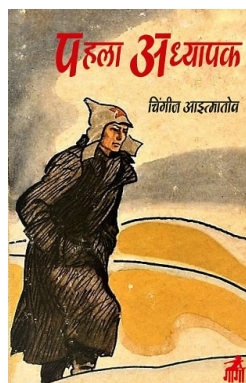
प्रथम संस्करणः 2001
नवीन संस्करणः 2018
आकार : 20X30/16
पृष्ठ : 108
मूल्यः रु. 40.00
ISBN : 81-87772-12-3

प्रथम संस्करणः 1997
नवीन संस्करणः 2012
आकार : डिमाई/8,
पृष्ठ : 320
मूल्यः रु. 80.00
ISBN:81-87772-20-4

मुक्ति मार्ग

हावर्ड फास्ट

यह अमरीका की अल्पसंख्यक महान जनता--नीग्रो-जनता--के इतिहास के एक अत्यन्त महान एवं शोकपूर्ण क्षण की कहानी है। जब से यह लिखी गयी है तब से अब तक इसका संसार की लगभग प्रत्येक भाषा में अनुवाद हो चुका है और संसार में सभी जगह औपनिवेशिक जनता द्वारा बड़ी एकरूपता और प्रेम के साथ यह पढ़ी गई है। 'मुक्ति-मार्ग' ऐतिहासिक उपन्यास है। इसकी विषय-वस्तु नीग्रो जाति के स्वत्वों का संघर्ष है और बात केवल नीग्रो जाति की नहीं है जो भी पददलित है, जिस पर भी अन्याय और अत्याचार होता है उसके साथ इस लेखक की सक्रिय सहानुभूति है, यह व्यक्ति या समूह कहीं का हो, कोई हो, किसी वर्ण का, किसी जाति का, किसी देश का, किसी युग का।

इटली की कहानियाँ

मक्सिम गोर्की

अनुवाद : डॉ. मदनलाल 'मधु'

''गोर्की बहुत ही सुन्दर ढंग से इटली की अनूठी प्रकृति, बहुत ही सच्चे शब्दों में इतावली जनता का सामान्य जीवन, उसके अभाव, निर्धनता, व्यथाएँ-यातनाएँ और उसका वीरतापूर्ण संघर्ष प्रस्तुत करने में सफल हुए हैं।''

जोवान्नी जेरमानेत्तो,
इतावली लेखक

'' 'कहानियों' के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। इनमें मानव के प्रति कितना अधिक प्यार, उसकी आत्मा की कितनी गहरी जानकारी और प्रकृति की कितनी अच्छी समझ की अनुभूति होती है। अद्भुत और उल्लासपूर्ण पुस्तक है!''

मिखाईल कोत्सूबीन्स्की,
उक्रइनी लेखक
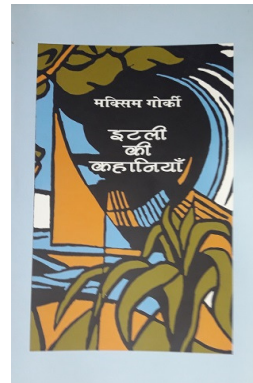
प्रथम संस्करणः 2000
नवीन संस्करणः 2012
आकार : डिमाई/8,
पृष्ठ : 178
मूल्यः रु. 60.00
ISBN:81-87772-23-9
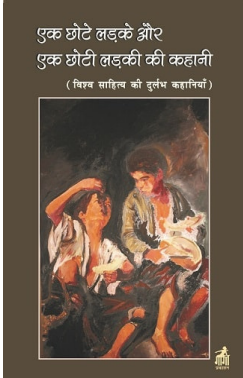
प्रथम संस्करणः 2017
आकार : डिमाई/8,
पृष्ठ : 80
मूल्यः रु. 40.00
ISBN : 81-87772-59-X

एक छोटे लड़के और एक छोटी लड़की की कहानी

(विश्व साहित्य की दुर्लभ कहानियाँ)

सम्पादन : वीणा भाटिया

इस संग्रह में शामिल लेखकों की कहानियाँ तो अब शायद ही कहीं मिल सकें। संग्रह में शामिल सभी कहानियाँ अपनी-अपनी भाषाओं में सर्वश्रेष्ठ हैं। इन कहानियों को पढ़ने का मतलब है विश्व साहित्य की क्लासिक परम्परा को जानना और समझना। साहित्य समय के प्रवाह में कभी पुराना नहीं पड़ता और उसमें नये अर्थ सन्दर्भ जुड़ते चले जाते हैं। वह हमेशा प्रासंगिक बना रहता है, जैसे--चेखव की कहानी 'गिरगिट'। ये दुर्लभ कहानियाँ पाठकों की प्रिय रही हैं और आज भी प्रिय लगेंगी। ये ऐसी धाराप्रवाह कहानियाँ हैं, जो अपने-आपको खुद पढ़वा ले जायेंगी। इसमें लुप्त होती जा रही विदेशी कहानियों का संग्रह किया गया है।

मरूस्थल

मोरिस सिमाश्को

यह उपन्यास उस जमाने का है, जब रूस के मजदूर-किसान ने निरंकुश जारशाही का तख्ता उलटकर सोवियत गणराज्य की स्थापना की थी। लेकिन सर्वहारा के वर्ग शत्रु पूरी तरह से खत्म नहीं हुए थे। वे छिपकर सोवियत सत्ता पर हमला कर रहे थे और उसे बदनाम करने की साजिश रचते रहते थे। जब उच्च वर्ग के शोषक आमने-सामने की लड़ाई हार गये तो वे लाल गार्डों का ड्रेस पहनकर जनता को लूटने लग गये थे। इसी तरह की लूट में चारी हसन ने अपना परिवार खो दिया। वह बदले की भावना से लाल सेना के साथ आ खड़ा हुआ। लेकिन बाद में किस तरह उसने व्यक्तिगत दुश्मन से बदले की भावना से ऊपर उठकर वर्गीय पक्षधरता हासिल की और वर्ग शत्रु के खिलाफ सामूहिक लड़ाई में शामिल हो गया, यही इस किताब की विषयवस्तु है।
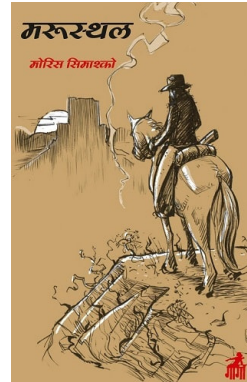
प्रथम संस्करणः 2017
आकार : 20X30/16
पृष्ठ : 128
मूल्यः रु. 40.00
ISBN : 81-87772-57-3

प्रथम संस्करण: 204
नवीन संस्करण: 2016
आकार : डिमाई/8,
पृष्ठ : 48
मूल्य: रु. 30.00
ISBN: 81-87772-25-5

जंगली घास

लू शुन

अनुवाद : दिगम्बर

विश्व साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर लू शुन की गद्य कविताओं का संकलन पहली बार 1928 में *वाइल्ड ग्रास* नाम से प्रकाशित हुआ था। इनका लेखन काल सितम्बर 1924 से अप्रैल 1926 के बीच है। यह वही दौर था जब 1911 में प्रतिक्रियावादी शक्तियाँ चीनी जनता का भारी दमन-उत्पीड़न कर रही थीं। जनता की पीड़ा के साथ गहरी सहानुभूति, शासक वर्गों के प्रति गहरा आक्रोश, समाज में व्याप्त उदासीनता और निष्क्रियता से उत्पन्न विक्षोभ तथा भविष्य के प्रति उत्कट आशा के इन्हीं मिले-जुले मनोभावों की झलक इन गद्य कविताओं में दिखायी देती है। इन कविताओं में मूल कथ्य समग्रता में एक अन्धकार में डूबे समाज की राजनीतिक ऐतिहासिक आलोचना हैं। इन कविताओं में लु शुन की गहन वैज्ञानिक दृष्टि और प्रखर काव्य संवेदना भी हैं।

आग की यादें

एदुआर्दो गालेआनो

अनुवाद : रेयाज उल हक

इस पुस्तक में गालेआनो के लेखन से एक चयन पेश है, जिसमें गालेआनो के सोचने के तरीके, उनकी विचारधारा और उनकी लेखन शैली का प्रधिनिधित्व मिलता है। संकलन में उनकी शुरुआती किताबों से लेकर उनकी अब तक प्रकाशित आखिरी किताब *मुखेरेस* (2014) से रचनाएँ शामिल की गयी हैं। गालेआनो को पढ़ते हुए यह अहसास बहुत साफ होता है कि शोषण और जुल्म की व्यवस्था हर जगह एक जैसी है और उनके लेखन में ही, यह बात भी उतनी ही शिद्दत से जाहिर होती है कि इस शोषण और जुल्म के खिलाफ प्रतिरोध भी पूरी दुनिया की अवाम की साझी विरासत है। गालेआनो जनपक्षधर और प्रतिबद्ध लेखक की एक मिसाल हैं-- जिन्होंने हमेशा जोखिम उठाया, एक के बाद एक साथियों की शहादतें देखीं लेकिन बराबरी पर आधारित एक जनवादी समाज के लिए अपनी लड़ाई से कभी नहीं हटे।
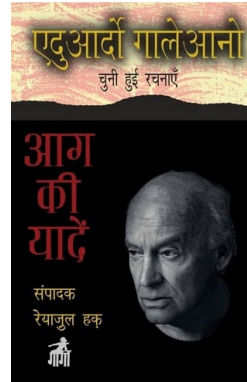
प्रथम संस्करण: 2016
आकार : डिमाई/8,
पृष्ठ : 136
मूल्य: रु. 80.00
ISBN: 81-87772-41-7

हो ची मिन्ह : एक क्रान्तिकारी का जीवन

सूफी अमरजीत

अनुवाद : रामपाल

वियतनाम के क्रान्तिकारी जननायक हो ची मिन्ह का जीवन परिचय अपने पाठकों तक पहुँचाना हमारे लिए प्रशन्नता की बात है। हो ची मिन्ह ने वियतनाम के मुक्ति युद्ध में फ्रांसीसी उपनिवेशवादियों और अमरीकी नवउपनिवेशवादियों की सैनिक शक्ति का मुकाबला अपने देश के जनगण की वीरता और अकूत बलिदान के बल पर किया। वियतनाम की मुक्ति के बाद अमरीकी साम्राज्यवाद के हमले को भी उन्होंने जनबल से नाकाम किया और अमरीका को इतनी बुरी तरह पराजित किया कि यह अमरीकी महाशक्ति के लिए एक स्थायी व्याधि- ''वियतनाम ग्रंन्थि'' बन गयी।
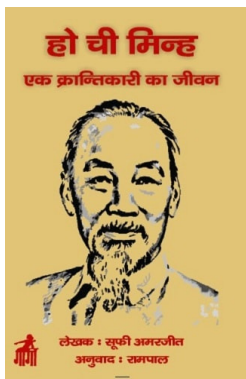
प्रथम संस्करणः 2014
नवीन संस्करणः 2018
आकार : डिमाई/8,
पृष्ठ : 192
मूल्यः रु. 100.00
ISBN : 81-87772-28-X

डॉ. नॉर्मन बेथ्यून की अमर कहानी

सिडनी गार्डन, टेड ऐलन

अनुवाद : दिनेश पोसवाल

यह पुस्तक डॉ. नॉर्मन बेथ्यून के जीवन और उनके कामों पर केन्द्रित है। एक चिकित्सक के रूप में अपने पेशे के लिए समर्पित डॉ. नॉर्मन बेथ्यून के अनूठे जीवन का परिचय हासिल करना एक व्यक्ति के जीवन से परिचय मात्र नहीं है। डॉ. बेथ्यून को जानना चिकित्सा विज्ञान के इतिहास और उस गौरवशाली परम्परा को समझाना है जिसमें चिकित्सकों को भगवान का दर्जा दिया जाता था। इसके साथ ही उनका जीवन उन चिकित्सकों की बेचैनी, छटपटाहट और निराशा को भी अभिव्यक्ति प्रदान करता है जो चिकित्सकीय पेशे को मानवता की सेवा का माध्यम समझते हैं, जो दूसरे डॉक्टरों की तरह हिप्पोक्रेटस के नाम पर ईमानदारी से अपने पेशे का निर्वाह करने की सिर्फ रस्मअदायगी के लिए शपथ नहीं लेते हैं...
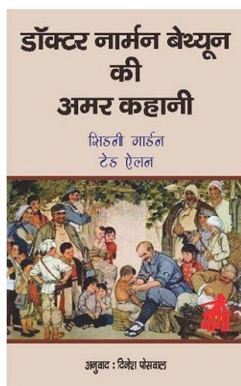
प्रथम संस्करणः 2014
नवीन संस्करणः 2017
आकार : डिमाई/8,
पृष्ठ : 344
मूल्यः रु. 160.00
ISBN : 81-87772-30-1
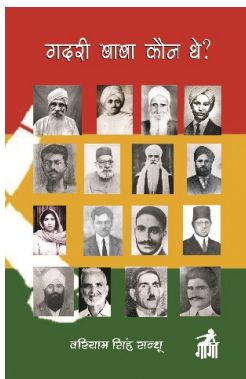
प्रथम संस्करणः 2016
आकार : डिमाई/8,
पृष्ठ : 80
मूल्यः रु. 35.00
ISBN : 81-87772-44-1

गदरी बाबा कौन थे

वरियाम सिंह सन्धू

अनुवाद : रामपाल

यह किताब गदर पार्टी के क्रान्तिकारियों के इतिहास के बारे में जानकारी उपलब्ध कराती है। 'गदरी बाबा' हम उन महान क्रान्तिकारी शूरवीरों को कहते हैं जो उत्तरी अमरीका और दूसरे मुल्कों में गये जो रोजी-रोटी और अच्छे जीवन की तलाश में थे, पर विदेशों में जाने से उनकी दृष्टि बहुत विशाल हुई, आजादी की कीमत पता लगी और गुलामी का अहसास तीखा हो जाने से उनमें आजादी के प्रति लगन पैदा हो गयी, अपनी जीवन-भर की जमा पूँजी, जमीन, जायदाद त्यागकर 20वीं सदी के दूसरे दशक में देश को आजाद कराने के लिए, हथियारबन्द इंकलाब करने के लिए हिन्दुस्तान लौटे थे ताकि वे अपने देशवासियों के सहयोग से और अंग्रेजी सेना में शामिल भारतीय सैनिकों की सहायता से 'गदर' करके देश को आजाद करवा सकें।

करतार सिंह सराभा

वरियाम सिंह सन्धू

अनुवाद : रामपाल

इतिहास के शोधकर्ताओं ने निस्सन्देह गदर पार्टी के सिद्धान्तों, संकल्पों, कुर्बानियों, उपलब्धियों और कमजोरियों का विवेचन और विश्लेषण करके देश के स्वतंत्रता संग्राम में इस लहर के महत्त्व को स्थापित करने का, अपनी क्षमता के अनुसार भरसक प्रयास किया गया है, लेकिन इसके बावजूद गदर लहर के बहुत सारे नायकों का जीवन प्रखर और जीवन्त रूप में हमारे रूबरू नहीं हुआ। इस लहर से सम्बन्धित इतिहास में और कुछ गदरी बाबाओं के संस्मरणों में उन गदरी शूरवीरों के जीवन और कार्यों के बारे में बिखरे हुए विवरण तो हमें नजर आ जाते हैं, लेकिन उनके जीवन पर पूर्ण और सुव्यवस्थित ढंग से प्रकाश डालने वाली ऐसी जीवनियाँ तो लगभग नदारद हैं जिनमें उनका जीवन पूरी क्रमबद्धता और सूक्ष्मता से भरपूर विवरण और बयान सहित विभिन्न परतों समेत पेश हुआ हो।

प्रथम संस्करणः 2016
आकार : डिमाई/8,
पृष्ठ : 38
मूल्यः रु. 20.00
ISBN : 81-87772-45-X
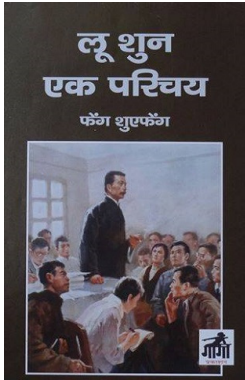
प्रथम संस्करणः 2014
नवीन संस्करणः 2018
आकार : डिमाई/8,
पृष्ठ : 24
मूल्यः रु. 20.00
ISBN : 81-87772-26-3

लू शुन एक परिचय

फेंग शुएफेंग

अनुवाद : दिगम्बर

इस पुस्तक में चीन के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी लेखक लू शुन के जीवन और उनके काम का जिक्र मिलता है। लू शुन न केवल उत्पीड़ितों की यंत्रणा का बल्कि उनकी अंतर्निहित शक्ति का भी वर्णन करते हैं और उनकी कई कहानियाँ चीन की मेहनतकश जनता के अच्छे गुणों को भी सामने लाती हैं। लू शुन अपने कथानक के रूप में चीनी मिथकों और पौराणिक कथाओं का भी उपयोग करते हैं। “स्वर्ग की मरम्मत” में प्राचीन काल के चीन की खोजपरकता का चित्रण है; “चाँद पर उड़ान” पौराणिक तीरंदाजी के बारे में वर्णन किया गया है। लू शुन की वैचारिक अवस्थिति और उनके लेखन का उद्‌देश्य उनकी कहानियों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

कार्ल मार्क्स

रामवृक्ष बेनीपुरी

कार्ल मार्क्स की यह जीवनी पहली बार 1951 में प्रकाशित हुई थी। कार्ल मार्क्स की विभिन्न भाषाओं में अनेक जीवनियाँ प्रकाशित हो चुकी थीं, पर हिन्दी में प्रकाशित यह पहली पुस्तक थी। एक लम्बे अन्तराल के बाद इसका पुनर्प्रकाशन हो रहा है। कार्ल हेनरिख मार्क्स का जन्म 5 मई, 1818 को जर्मनी के ट्रायर नामक स्थान में हुआ। ज्यों-ज्यों कार्ल मार्क्स बड़े होते गये वह एक अप्रत्याशित मार्ग पर दृढ़ता से बढते गये। उनका स्वभाव लोहे जैसा दृढ़ था। वे कठिन राह पर चलने से जरा भी विचलित नहीं होते थे। कहने की जरूरत नहीं कि पिछले 150 साल के इतिहास में मार्क्सवादी विचारधारा ने दुनिया पर सबसे अधिक प्रभाव डाला है। मार्क्सवाद के जनक कार्ल मार्क्स की जिन्दगी से गुजरना एक अद्‌भुत अनुभव है।
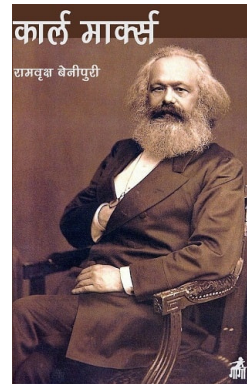
प्रथम संस्करणः 2016
आकार : डिमाई/8,
पृष्ठ : 136
मूल्यः रु. 75.00
ISBN : 81-87772-53-0
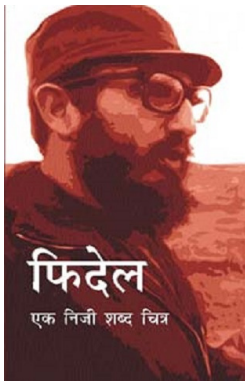
फिदेल : एक निजी शब्द चित्र

गेब्रियल गार्सिया मार्खेज

1 जनवरी, 1959 को बतिस्ता क्यूबा छोड़कर भाग गया। कास्त्रो द्वारा किये गये एक आह्वान की प्रतिक्रिया स्वरूप लाखों क्यूबाइयों ने एक आम बगावत और आम हड़ताल शुरू कर दी जिसने क्रान्ति की जीत पर मुहर लगा दी। 8 जनवरी, 1959 को क्यूबा की विजयी विद्रोही सेना के कमाण्डर इन चीफ के तौर पर विजेता फिदेल कास्त्रो हवाना पहुँचे। 13 फरवरी, 1959 को वे क्यूबा के प्रधनमंत्री बने। दिसम्बर, 1976 में राज्य- परिषद और परिषद के अध्यक्ष बनने तक, वे इसी पद पर बने रहे।

प्रस्तुत पुस्तिका क्यूबाई क्रान्ति के इसी महानायक, फिदेल कास्त्रो के व्यक्तित्व के बहुत से अनछुए पहलुओं को उद्घाटित करती है।

प्रथम संस्करणः 2006
नवीन संस्करणः 2017
आकार : डिमाई/8,
पृष्ठ : 24
मूल्यः रु. 10.00
ISBN : 81-87772-18-2

इतिहास जैसा घटित हुआ

(मंथली रिव्यू के 50 सालों के चुने हुए लेख)

यह पुस्तक मंथली रिव्यू में 50 वर्षों की अवधि के दौरान प्रकाशित लेखों का सकंलन- ***हिस्ट्री एज इट हैपेंड*** का हिन्दी अनुवाद है, जो सबसे पहले मंथली रिव्यू प्रेस न्यू यॉर्क से और भारत में कॉर्नरस्टोन पब्लिकेशंस, खड़गपुर से अंग्रेजी में प्रकाशित हुआ था। हम इन दोनों प्रकाशकों के प्रति आभारी और कृतज्ञ हैं।

इन लेखों में *मंथली रिव्यू* के लेखकों-सम्पादकों की गहरी अन्तरदृष्टि, सच्चाई को उजागर करने के प्रति उनकी दृढ़ आस्था और अदम्य साहस सुस्पष्ट हैं। इनमें जिन घटनाओं का विवरण और विश्लेषण दिया गया है उनका समसामायिक ही नहीं, बल्कि सर्वकालिक महत्त्व है। इस अनमोल संकलन को हिन्दी पाठकों तक पहुँचाते हुए हमें प्रसन्नता हो रही है। इस संकलन की हर रचना हमारे समकालीन इतिहास का जीवन्त और प्रामाणिक दस्तावेज है।
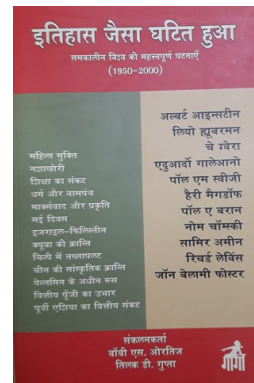
प्रथम संस्करणः 2014
नवीन संस्करणः 2017
आकार : डिमाई/8,
पृष्ठ : 320
मूल्यः रु. 150.00
ISBN : 81-87772-32-8

प्रथम संस्करणः 2001
नवीन संस्करणः 2017
आकार : डिमाई/8,
पृष्ठ : 64
मूल्यः रु. 30.00
ISBN: 81-87772-11-5
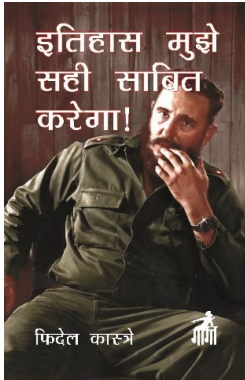
इतिहास मुझे सही साबित करेगा

फिदेल कास्त्रो

'इतिहास मुझे सही साबित करेगा' फिदेल कास्त्रो द्वारा अदालत में दिया गया वह भाषण है जो उन्होंने सेटिंयागो डी क्यूबा मौनकाडा बैरकों पर फौजी हमले के लिए उनपर और उनके जुझारू साथियों पर चलाये गये मुकदमे में बचाव-पक्ष की ओर से दिया था। फिदेल कास्त्रो का यह भाषण उसकी अन्तिम पंक्ति से ही दुनिया भर में जाना जाता है।

क्यूबा के दूर-दराज के एक अस्पताल में कड़े फौजी पहरे के बीच चलाये गये मुकदमे में दिया गया यह भाषण आज दुनिया के लगभग हर देश में जाना और पढ़ा जाता है। इस भाषण ने न केवल क्यूबा के युवा क्रान्तिकारियों का मार्गदर्शन किया बल्कि वास्तव में यह क्यूबाई क्रान्ति का घोषणापत्र बन गया।

क्यूबा क्रान्ति के पचास वर्ष

(मंथली रिव्यू के चुने हुए लेखों का संकलन)

हिन्दी पाठकों के लिए हम इस अंक के तीन लेखों का यह संकलन प्रस्तुत कर रहे हैं। प्रस्तुत तीनों लेख-- 'पहले से ज्यादा प्रासंगिक है 'क्यूबा', 'क्यूबाई क्रान्ति का लम्बा अभियान' और 'क्यूबा के क्रान्तिकारी डॉक्टर'-- क्यूबा के प्रति बनी भ्रामक धरणाओं को तोड़ने और सही समझ कायम करने में सार्थक भूमिका निभायेंगे। आज क्यूबाई क्रान्ति के पचास वर्ष होने पर दुनियाभर की मेहनतकश अवाम को एक बार फिर सच्चाई से रू-ब-रू कराना न केवल आवश्यक है, वरन अवश्यंभावी भी। आज क्यूबा के बारे में यदि विभ्रम की स्थिति कायम है तो इसकी मूल वजह साम्राज्यवादी दुष्प्रचार, तमाम तथ्यों-सच्चाइयों की जानकारी का अभाव या पिफर मार्क्सवाद की यांत्रिक समझदारी है।
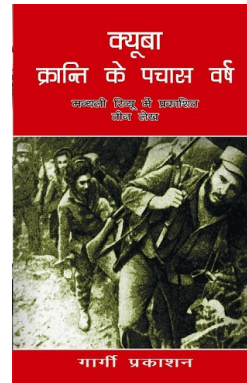
प्रथम संस्करणः 2012
नवीन संस्करणः 2012
आकार : डिमाई/8,
पृष्ठ : 64
मूल्यः रु. 15.00
ISBN: 81-87772-72-7

स्वाधीनता संग्राम में मुस्लिम भागीदारी

पृथ्वी राज कालिया

अनुवाद : कामता प्रसाद

इसमें कोई सन्देह नहीं कि मुसलमानों ने राष्ट्रीय आन्दोलन में जबरदस्त भूमिका निभायी। वे देशभक्त और समर्पित लोग थे और इसलिए उन्होंने भारत का शोषण करने वाली विदेशी ताकतों को बाहर खदेड़ने के लिए कठिन संघर्ष किया। आज फासीवाद के उभार के दौर में इन सबको नकारा जा रहा है। इसीलिए आज इन्हें फिर से रेखांकित करने की नये सिरे से जरूरत है। यही इस पुस्तक की विषयवस्तु है।

पहले दो लेख अंग्रेजी पुस्तक द गदर मूवमेंट एंड इण्डियाज' एंटी-इम्पीरियलिस्ट स्ट्रगल से लिये गये हैं जो नवम्बर 2013 में गदर आन्दोलन की शतवार्षिकी समारोह के अवसर पर प्रकाशित हुई थी।

प्रथम संस्करणः 2016
नवीन संस्करणः 2018
आकार : डिमाई/8,
पृष्ठ : 88
मूल्यः रु. 50.00
ISBN : 81-87772-48-4

लाल रूस

रामवृक्ष बेनीपुरी

हिन्दी में एक ऐसी किताब की जरूरत थी, जो उसके व्यक्तियों की चकाचौंध में या उसके राजनीतिक ढाँचे के उलझन में नहीं पड़कर, सीधे-सादे शब्दों में यह बताये कि इन पच्चीस वर्षों में रूस ने अपने समृद्धि और संस्कृति की वृद्धि के लिए क्या किया और उसमें उसे कहाँ तक सफलता मिली। अनेक त्रुटियों के बावजूद लाल रूस ने आर्थिक और सामाजिक क्षेत्रें में जो उन्नति की है, वह जारशाही रूस को नजर में रखते हुए संसार की एक आश्चर्यजनक घटना है। संसार के अन्धकार-से-अन्धकार प्रदेशों में जीवन और ज्ञान की किरणें फैलाकर संसार की पिछड़ी-से-पिछड़ी जातियों में जागरण और संघटन की भावना भरकर, लाल रूस ने ऐसा आदर्श संसार के सामने रखा है, जिसे भुलाया नहीं जा सकता!
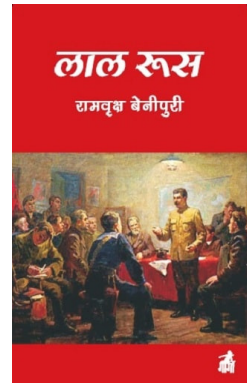
प्रथम संस्करणः 2016
आकार : डिमाई/8,
पृष्ठ : 112
मूल्यः रु. 60.00
ISBN : 81-87772-52-2
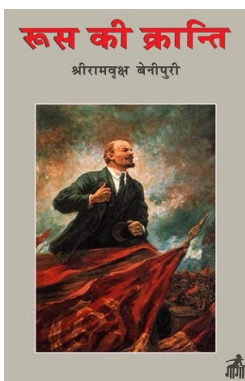
प्रथम संस्करणः 2016
आकार : डिमाई/8,
पृष्ठ : 320
मूल्यः रु. 150.00
ISBN : 81-87772-55-7

रूस की क्रान्ति

रामवृक्ष बेनीपुरी

'रूस की क्रान्ति' पुस्तक श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी ने 1942 से 1945 तक के बीच लिखी थी, जो सम्भवतः लियोन त्रात्स्की के 'हिस्ट्री ऑफ रशियन रिवोल्यूशन' पर आधारित है। यह पुस्तक 1944-45 में अप्रकाशित रही। साम्यवाद या मार्क्सवाद में विश्वास करनेवालों के लिए यह तब भी सारगर्भित थी और आज भी है।

1917 की रूस की क्रान्ति विश्व इतिहास की एक बहुत बड़ी घटना थी। 20वीं सदी की शुरूआत में रूस आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक मोर्चे पर तेज बदलावों से गुजर रहा था। ऐसी हालत में जनता नये-नये प्रयोग कर रही थी। 1917 की क्रान्ति का प्रारम्भिक उद्देश्य था, नौकरशाही राजतंत्र को उलट देना। लेकिन वह राजतंत्र को उलटकर सिर्फ प्रजातंत्र पर ही रुकी नहीं रही।...

लाल चीन

रामवृक्ष बेनीपुरी

इस पुस्तक में आप वर्तमान-युग के इन चमत्कारिक विषयों के जीवित वर्णन के साथ भाषा-चमत्कार भी पायेंगे जो कम-से-कम मुझे तो अन्यत्र देखने को नहीं मिलता। जैसी जानदार चीजों और हस्तियों को लेखक ने आपके सामने रखा है उसके उपयुक्त ही जान उनकी शैली में भी है। लाल चीन और उसके निर्माता हमारे सामने इतिहास के सूखे अस्थिपंजरों की तरह नहीं रखे गये हैं, बल्कि प्राणों से फड़कती हुई वास्तविक जीवन की चलती-फिरती जानदार चीजों की तरह हमारे सामने आये हैं। इस तरह एमिल लुडविक की भाँति जिन्दा इतिहास लिखने में बेनीपुरी जी को कितनी कामयाबी हुई है, पाठक स्वयं देख लें।
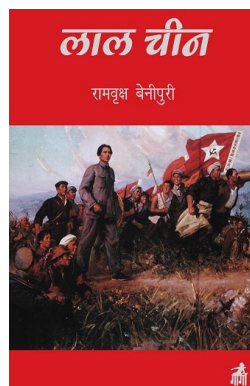
प्रथम संस्करणः 2016
आकार : डिमाई/8,
पृष्ठ : 144
मूल्यः रु. 75.00
ISBN : 81-87772-54-9
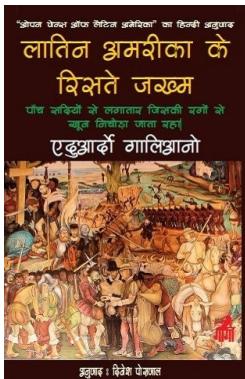
प्रथम संस्करण: 2015
आकार : डिमाई/8,
पृष्ठ : 336
मूल्य: रु. 200.00
ISBN : 81-87772-38-7

लातिन अमरीका के रिसते जख्म

एदुआर्दो गालेआनो

अनुवाद : दिनेश पोसवाल

यह किताब उस वक्त से प्रारम्भ होती है जब कोलम्बस ने महासागरों को पार करके पहली बार लातिन अमरीका की धरती पर कदम रखा था। यह उस पूँजीवादी दमन और शोषण की शुरुआत थी, जिसने पूरे विश्व का परिदृश्य ही बदल दिया। लातिन अमरीका से उसके सारे प्राकृतिक संसाधन लूट लिये गये। इस काम के लिए अफ्रीका से गुलामों को जहाजों में भर-भरकर वहाँ लाया गया और उनसे जानवरों की तरह काम लिया गया। यह किताब पूँजीवाद के शुरुआती गौरवशाली इतिहास के पीछे छिपे काले सच को बेनकाब करती है। यह किताब उन लोगों की कहानी बयान करती है जिन्होंने इस चमक-दमक की कीमत चुकायी और जिसे परम्परागत इतिहास की किताबों में शुमार नहीं किया गया।

दर्शन की सामाजिक भूमिका और भारतीय जीवन दृष्टि

सुधा चौधरी

डॉ. सुधा चौधरी की पुस्तक 'दर्शन की सामाजिक भूमिका और भारतीय जीवन दृष्टि' जितनी दर्शनशास्त्र के पठन-पाठन में लगे हुए लोगों के लिए उपयोगी और आकर्षक है, उतनी ही सामान्य पाठक के लिए भी। यह पुस्तक हिन्दी भाषा में दर्शनशास्त्र को समझने, हमारे जीवन में उसके महत्त्व को स्थापित करने, उसकी मुक्तिकामी परियोजना को मुकम्मल तौर पर सामने रख कर दर्शनशास्त्र के भविष्य के बारे में प्रबुद्ध और सामान्य जन को प्रेरित करने में निश्चय ही कामयाब रहेगी। इस पुस्तक का लिखा जाना हिन्दी-उर्दू क्षेत्र की जनता की एक बड़ी जरूरत को पूरा करता है।
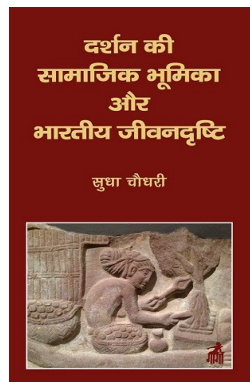
प्रथम संस्करण: 2016
आकार : डिमाई/8,
पृष्ठ : 280
मूल्य: रु. 140.00
ISBN : 81-87772-51-4
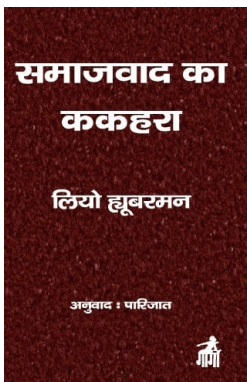
प्रथम संस्करणः 2014
नवीन संस्करणः 2017
आकार : डिमाई/8,
पृष्ठ : 80
मूल्यः रु. 40.00
ISBN : 81-87772-29-8

समाजवाद का ककहरा

लियो ह्यूबरमन

अनुवाद : पारिजात

समाजवाद का ककहरा के लेखक लियो ह्यूबरमन वामपंथी बुद्धिजीवियों के लिए ही नहीं, बल्कि सुधी पाठकों के लिए भी सुपरिचित नाम है। इनकी मशहूर पुस्तक *मैन्स वर्ल्डली गुड्स* का हिन्दी अनुवाद *मनुष्य की भौतिक सम्पदाएँ* गार्गी प्रकाशन से प्रकाशित हुई है और पाठकों ने इसे काफी सराहा है। न्यूयार्क से प्रकाशित पत्रिका *मंथली रिव्यू* के संस्थापक सम्पादक के रूप में समाजवाद के प्रचार-प्रसार में उनका अनुपम योगदान रहा है।

इस पुस्तिका में समाजवाद के मूल सिद्धान्तों को अमरीकी समाज की सच्चाइयों के आधार पर बहुत ही तार्किक, सुस्पष्ट और कायल बनाने वाली शैली में प्रस्तुत किया गया है।

नाजीवादी जर्मनी की मनोदशा

कार्ल जी. युंग

अनुवाद : दिगम्बर

यह किताब समय-समय पर प्रकाशित लेखों का संग्रह है जो 1936 से 1946 के बीच लिखे गये थे। यह किताब समूह के मनोविज्ञान पर केन्द्रित है जो खाई में धकेलने वाला खतरनाक रुझान, बड़ी तादाद और मजबूत संगठनों में यकीन दिलाने वाली ऐसी ही खुशफहम सोच से शुरू होता है जहाँ व्यक्ति महज बेनाम हैसियत में छीजता जाता है। फिर हर वह चीज जो एक आम इनसान से बढ़-चढ़कर हो, वह आदमी के अचेतन में उतरकर तानाशाह शैतान को जन्म देती है। बजाय यह अहसास दिलाने के कि जिस काम को सचमुच पूरा किया जा सकता है वह व्यक्ति के नैतिक स्वभाव की ओर एक बहुत ही छोटा कदम बढ़ाना है, हमारे हथियारों की तबाही लाने वाली ताकत बेइन्तहा बढ़ गयी है और इनसान के ऊपर इस मनोवैज्ञानिक समस्या को थोप रही है--इन हथियारों का इस्तेमाल जर्मनी में खूब किया गया था।
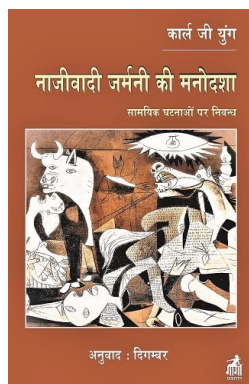
प्रथम संस्करणः 2017
आकार : डिमाई/8,
पृष्ठ : 108
मूल्यः रु. 60.00
ISBN : 81-87772-60-3

प्रथम संस्करणः 2012
नवीन संस्करणः 2017
आकार : डिमाई/8,
पृष्ठ : 88
मूल्यः रु. 40.00
ISBN : 81-87772-22-0

विज्ञान और वैज्ञानिक नजरिया

(संकलन)

इस पुस्तिका में संकलित लेख वैज्ञानिक नजरिया विकसित करने की दिशा में सक्रिय एक ऐसे ही मंच-- ***द बैंगलोर साइन्स फोरम*** द्वारा 1987 में प्रकाशित ***''साइन्स, नॉन साइन्स एण्ड द पारानौरमल''*** नामक एक दुर्लभ संकलन से लिये गये हैं। इस संकलन में विज्ञान और वैज्ञानिक नजरिये से सम्बन्धित गम्भीर लेखों के अलावा अंधविश्वास और चमत्कार का पर्दाफाश करने वाले कई लेख संकलित हैं। अपनी क्षमता और सीमा को देखते हुए हमने इनमें से 10 लेखों का चुनाव किया और हिन्दी पाठकों के लिए उनका अनुवाद प्रस्तुत किया है। मध्ययुगीन, अवैज्ञानिक-अतार्किक, जड़मानसिकता का प्रभावी होना हमारे देश और समाज की प्रगति में बहुत बड़ी बाधा है। इन्हीं पहलुओं को समझने-समझाने की दिशा में यह पुस्तक एक विनम्र प्रयास है।

पाप और विज्ञान

डाइसन कार्टर

आमतौर पर यह माना जाता है कि गुप्तरोग, गर्भपात, व्यभिचार, वेश्यावृत्ति, देह-व्यापार, तलाक, शराबखोरी जैसी सामाजिक बुराइयाँ धर्म और अध्यात्म से जुड़ी हुई हैं। इन पापाचारों का समाधान भी धर्म और अध्यात्म से करने के दावे किये जाते हैं। हजारों सालों से धर्म और अध्यात्म के नुस्खों से इन सामाजिक बुराइयों को खत्म करने की कोशिश की गयी लेकिन ये बुराइयाँ न केवल बनी रहीं बल्कि इनका चौतरफा विस्तार भी हुआ। कोई भी देश या समाज इनसे अछूता नहीं है। पहली बार रूसी क्रान्ति के बाद स्थापित मजदूरों के राज्य सोवियत संघ ने अनूठा वैज्ञानिक प्रयोग किया। वहाँ इन्हें धर्म और अध्यात्म के भरोसे न छोड़कर इनके खिलाफ मुकम्मिल लड़ाई लड़ी गयी जो वैज्ञानिक तरीकों पर आधारित थी। वहाँ की सफलता को आज साम्राज्यवाद कुत्सा-प्रचार की आँधी चलाकर इन्हें खत्म करने की साजिश कर रहा है। इन सच्चाइयों को जनता के सामने लाने का काम इस पुस्तक में किया गया है।
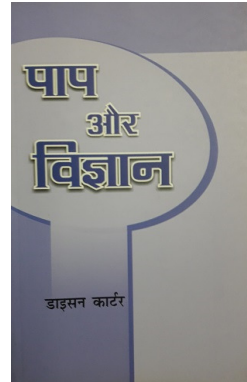
प्रथम संस्करणः 1995
नवीन संस्करणः 2012
आकार : डिमाई/8,
पृष्ठ : 186
मूल्यः रु. 50.00
ISBN : 81-87772-10-7
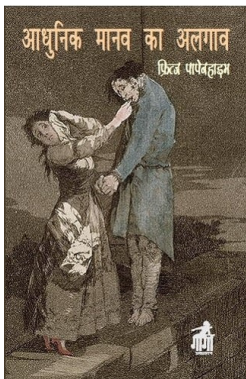
आधुनिक मानव का अलगाव

फ्रित्ज पापेनहाइम

अनुवाद : दिगम्बर

शीर्षक से ही स्पष्ट है कि यह किताब अपने आस-पास की दुनिया से अलग-थलग, अलगावग्रस्त व्यक्ति की लाचारी और दुर्दशा के बारे में है। अलगाव के बारे में अपने अन्तिम निष्कर्षों के समर्थन में लेखक ने कार्ल मार्क्स और फर्दिनान्द टोनीज की रचनाओं पर विस्तार से चर्चा की है।

किताब का विषय-- अलगाव, अजनबीयत या बेगानापन, जिससे नयी कविता, नयी कहानी जैसी साहित्यिक धाराओं तथा काफ्का, कामू और सार्त्र जैसे अस्तित्ववादियों की रचनाओं के जरिये परिचय मिलता है, उसका खुलासा लेखक ने बहुत ही दिलचस्प और कायल बना देने वाली शैली में किया है।

प्रथम संस्करणः 2012
नवीन संस्करणः 2018
आकार : डिमाई/8,
पृष्ठ : 148
मूल्यः रु. 80.00
ISBN : 81-87772-21-2

क्वाण्टम के सौ साल

रवि सिन्हा

क्वाण्टम भौतिकी सामान्यतः प्राकृतिक विज्ञानों के और विशेषकर सैद्धान्तिक भौतिकी के विकास का सर्वोच्च सोपान है। प्रकृति अपने सभी सम्भव रूपों में तथा सूक्ष्मातिसूक्ष्म अंशों में भी ज्ञेय है। सद्यः समाप्त शताब्दी की इस महान वैज्ञानिक उपलब्धि की विकासयात्रा से हिन्दी के पाठकों को परिचित कराने के उद्देश्य से यह छोटी सी पुस्तिका अत्यन्त प्रभावकारी है। न केवल क्वाण्टम यान्त्रिकी की अब तक की विकासयात्रा से, बल्कि यह आलेख उस प्रक्रिया के उतार-चढ़ावों, उसमें चली बहसों व विवादों तथा उनके दार्शनिक गूढ़ार्थों से हमें सरल और सुबोध ढंग से परिचित कराता है। यह हिन्दी के आम पाठकों के लिए बोधगम्य है जो विज्ञान, दर्शन और उनके अन्र्तसम्बन्ध जैसे विषयों पर आमतौर पर रुचि रखते हैं लेकिन आधुनिक भौतिकी की बारीकियों को गणितीय भाषा में समझने में कठिनाई महसूस करते हैं।
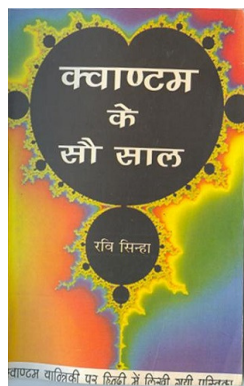
प्रथम संस्करणः 2003
नवीन संस्करणः 2012
आकार : डिमाई/8,
पृष्ठ : 132
मूल्यः रु. 40.00
ISBN : 81-87772-15-8

प्रथम संस्करणः 2016
आकार : डिमाई/8,
पृष्ठ : 152
मूल्यः रु. 100.00
ISBN : 81-87772-42-5
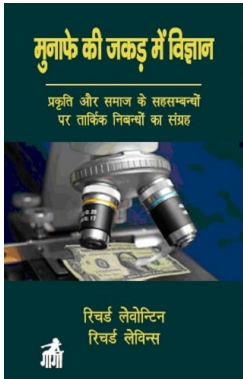
मुनाफे की जकड़ में विज्ञान

रिचर्ड लेविन्स, रिचर्ड लेवोंटिन

इस पुस्तक में विज्ञान की दोहरी प्रकृति के सामान्य प्रसंग के इर्दगिर्द लिखे हमारे निबन्धों का संकलन है। एक तरफ विज्ञान हजारों वर्ष के मानव ज्ञान का क्रमबद्ध विकास है, लेकिन दूसरी ओर यह एक पूँजीवादी ज्ञान उद्योग के विशेष उत्पाद की तरह माल में बदल दिया गया है। इसी का नतीजा है, सम्पूर्ण वैज्ञानिक उद्यम की निरन्तर बढ़ती अतार्किकता के साथ-साथ प्रयोगशाला और शोध परियोजना के स्तर पर लगातार परिष्कृत होता जा रहा एक विचित्र विकास।

इसमें शामिल कुछ छोटे लेख कैपिटलिज्म, नेचर, सोशलिज्म जरनल में छपने वाले हमारे स्तम्भ- ''एपुर सी मूवे'' (लेकिन वह तो घूम रही है) से लिये गये हैं।

हमारे नये प्रकाशन

अफ्रीका : साहित्य शृंखला

1. पत्थरों का देश	अलेक्स ला गुमा	120.00
2. खून की पंखुड़ियाँ	न्गुगी वा थ्योंगो	300.00
3. एक बहुत लम्बा खत	मरियामा बा	60.00
4. आज की अफ्रीकी कहानियाँ-1	आनन्द स्वरूप वर्मा	120.00
5. आज की अफ्रीकी कहानियाँ-2	आर शान्ता सुन्दरी	50.00
6. जनाब कोएनर की कहानियाँ	बर्तोल्त ब्रेख्त	60.00
7. डॉ. कोटनिस की स्मृति में	श्येनकुङ, चीशन, छाङमान	80.00
8. सवालों की किताब	पाब्लो नेरुदा	40.00
9. किस्सों का शिकारी	एदुआर्दो गालेआनो	25.00
10. चे ग्वेरा की याद में	फिदेल कास्त्रो	60.00
11. न्यूरेमबर्ग मुकदमा (एक रिपोर्ट)	यारोस्लाव हलान	50.00
12. निगरानी पूँजीवाद	फोस्टर और मैक्चेस्नी	20.00
13. बुद्धिजीवी का दायित्व	संकलन	60.00
14. एक अर्थशास्त्री का सफरनामा	माइकल डी येट्स	60.00
15. नौजवानों के लिए गोर्की, प्रेमचन्द, लु शुन	राणा प्रताप	80.00

हमारे अन्य प्रकाशन

1. लाल रूस	रामवृक्ष बेनीपुरी	60.00
2. लाल चीन	रामवृक्ष बेनीपुरी	75.00
3. कार्ल मार्क्स	रामवृक्ष बेनीपुरी	75.00
4. रूस की क्रान्ति	रामवृक्ष बेनीपुरी	150.00
5. दर्शन की सामाजिक भूमिका और भारतीय जीवन दृष्टि	सुधा चौधरी	140.00
6. नाजीवादी जर्मनी की मनोदशा	कार्ल जी. युंग	60.00
7. उदारवादी वायरस	समीर अमीन	50.00
8. एक छोटे और एक छोटी लड़की की कहानी	वीणा भाटिया	40.00
9. चेतना का मण्डीकरण	जैरी मेंडर	20.00
10. मरूस्थल	मोरिस सिमाश्को	40.00
11. स्वाधीनता संग्राम में मुस्लिम भागीदारी	पृथ्वी राज कालिया	50.00
12. क्यूबा का तजुर्बा	मंथली रिव्यू में प्रकाशित लेख	10.00
13. मुनाफे की जकड़ में विज्ञान	रिचर्ड लेविन्स/रिचर्ड लेवोंटिन	100.00
14. साम्राज्यवाद आज	संकलन	80.00
15. आग की यादें	एदुआर्दो गालेआनो	80.00
16. गदरी बाबा कौन थे	वरियाम सिंह सन्धु	40.00
17. करतार सिंह सराभा	वरियाम सिंह सन्धु	20.00
18. अन्तहीन संकट	फोस्टर/मैक्चेस्नी	150.00
19. मार्क्सवाद परिचय माला	शिव वर्मा	50.00
20. लातिन अमरीका के रिसते जख्म	एदुआर्दो गालेआनो	200.00
21. आजादी या मौत	वेद प्रकाश 'वटुक'	130.00
22. इतिहास जैसा घटित हुआ	संकलन	150.00
23. डॉक्टर नार्मन बेथ्यून की अमर कहानी	सिडनी गार्डन/टेड एलन	160.00
24. हो ची मिन्ह	सूफी अमरजीत	100.00
25. जंगली घास (गद्य कविताएँ)	लू शुन	30.00
26. लू शुन : एक परिचय	फेंग शुएफेंग	20.00
27. समाजवाद का ककहरा	लियो ह्यूबरमन	40.00
28. एक विराट जुआघर	फिदेल कास्त्रो	30.00
29. सुल्ताना का सपना	रुकैय्या सखावत हुसैन	10.00
30. आधुनिक मानव का अलगाव	फ्रित्ज पापेनहाइम	80.00
31. विज्ञान और वैज्ञानिक नजरिया	संकलन	40.00

32. सिर्फ आर्थिक विकास ही नहीं...	ज्याँ द्रेज/अमर्त्य सैन	10.00
33. लीबिया का पुनः औपनिवेशीकरण	एजाज अहमद	10.00
34. वित्तीय महासंकट	संकलन	80.00
35. विश्वव्यापी कृषि संकट	संकलन	50.00
36. विश्व खाद्य संकट	संकलन	50.00
37. असमाधेय संकट	संकलन	40.00
38. क्यूबा क्रान्ति के पचास वर्ष	संकलन	30.00
39. पहला अध्यापक	चिंगीज आइत्मातोव	40.00
40. तस्वीर	निकोलाई गोगोल	20.00
41. इटली की कहानियाँ	मक्सिम गोर्की	60.00
42. मुक्ति मार्ग	हावर्ड फास्ट	80.00
43. पाप और विज्ञान	डाइसन कार्टर	50.00
44. फिदेल : एक निजी शब्द चित्र	गेब्रियल गार्सिया मार्क्वेज	10.00
45. इतिहास मुझे सही साबित करेगा	फिदेल कास्त्रो	30.00
46. मनुष्य की भौतिक सम्पदाएँ	लियो ह्यूबरमन	120.00
47. भगत सिंह का सन्देश	संकलन	25.00
48. एक और ग्यारह सितम्बर	फिदेल कास्त्रो	20.00
49. कल बहुत देर हो जायेगी	फिदेल कास्त्रो	25.00
50. मार्क्स की वापसी	रणधीर सिंह	5.00
51. बुर्जुआ समाज और संस्कृति	राधागोविन्द चट्टोपाध्याय	10.00
52. बढ़ती बेरोजगारी	नौजवान भारत सभा	20.00
53. भगत सिंह को याद करने का अर्थ	नौजवान भारत सभा	5.00
54. गेहूँ का आयात	रूपे	10.00
55. प्यूचे : आत्महत्या के बारे में	कार्ल मार्क्स	15.00
56. मकड़ा और मक्खी	विल्हेल्म लिब्कनेख्त	5.00
57. प्रेमचन्द की तीन कहानियाँ	प्रेमचन्द	10.00
58. क्वाण्टम के सौ साल	रवि सिन्हा	40.00
59. क्या करें?	संकलन	15.00
60. जनता के गीत	संकलन	25.00
61. सृजनशीलता हमेशा सामाजिक होती है	एजाज एहमद	5.00
62. क्या पूँजीवाद एक बीमारी है?	रिचर्ड लेविन्स	10.00
63. आइन्सटीन के सामाजिक सरोकार	अलबर्ट आइन्सटीन	10.00
64. Is Capitalism a Disease?	Richard Levins	10.00

पर्यावरण लोक मंच

1. जीन टेक्नोलॉजी और हमारी खेती	प्रो. नरसिंह दयाल	50.00
2. Climate Change and Environmental Crisis		50.00

अन्तरराष्ट्रीय प्रकाशन

नयी प्रस्तुति

1.	खेती में पूँजीवाद	वी आई लेनिन	20.00
2.	युवक संघों के कार्य	वी आई लेनिन	10.00
3.	पेरिस कम्यून के सबक	वी आई लेनिन	10.00
4.	1905 की रूसी क्रान्ति के सबक	वी आई लेनिन	10.00
5.	राजसत्ता क्या है?	वी आई लेनिन	10.00
6.	धर्म के बारे में	वी आई लेनिन	30.00
7.	समाजवादी लोकतन्त्र	वी आई लेनिन	40.00
8.	सन सत्तरह की रूसी क्रान्ति	चित्र-कथा	90.00
9.	सर्वहारा अधिनायकत्व के बारे में		50.00
....			
10.	अफीम युद्ध से मुक्ति तक	इजराइल एप्सटाइन	150.00
11.	कम्युनिस्ट पार्टी की बुनियादी समझदारी	संकलन	100.00
12.	माओ की आत्मकथा और लम्बा अभियान	एडगर स्नो	25.00
13.	दर्शन कोई रहस्य नहीं	सांस्कृतिक क्रान्ति के अनुभव	25.00
14.	द्वन्द्ववाद के जरिये जनता की सेवा	सांस्कृतिक क्रान्ति के अनुभव	15.00
15.	राजसत्ता और क्रान्ति	संकलन	30.00
16.	चीनी कम्युनिस्ट पार्टी भीतर दो लाइनों के सघर्ष का इतिहास		30.00
17.	कला, साहित्य और सांस्कृतिक के बारे में माओ विचार	संकलन	20.00
18.	माओ की तीन रचनाएँ	माओ त्से तुङ	10.00
19.	नौजवान आन्दोलन के बारे में	माओ त्से तुङ	10.00
20.	व्यवहार और अन्तरविरोध के बारे में	माओ त्से तुङ	25.00
21.	माओ त्से तुङ की चार रचनाएँ	माओ त्से तुङ	25.00
22.	इतिहास ने जब करवट बदली	विलियम हिण्टन	30.00
23.	समकालीनों की नजर में स्तालिन	संकलन	30.00
24.	महान बहस	संकलन	120.00

25. Restoration of Capitalism in USSR	Martin Nicolus	60.00
26. Turning Point in China	William H. Hinton	40.00
27. The Documents of the Great Debate (three volumes, three books) Set		300.00
28. The Documents of the Great proletarian Cultural Revolution in China (three volumes, eight books) Set		2400.00

अन्य उपयोगी पुस्तकें/पुस्तिकाएँ

1. विश्वव्यापी आर्थिक संकट	10.00
2. शिक्षा का असाध्य संकट	20.00
3. ट्यूनीशिया, मिस्र और अरब जगत में भूचाल	5.00
4. जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण संकट	20.00
5. लीबिया पर कब्जे का साम्राज्यवादी मंसूबा	10.00
6. बेलगाम भ्रष्टाचार	20.00
7. भ्रष्टाचार के प्रति भद्रलोक का भ्रामक नजरिया	10.00
8. नवउदारवादी आर्थिक नीतियों के दो दशक	10.00
9. अमरीका के रणनीतिक स्वार्थ, भारत और श्रीलंका में युद्ध अपराध	20.00
10. नोटबन्दी : किसकी सजा, किसका मजा?	10.00
11. भ्रष्टाचार, कालाधन और नोटबन्दी	10.00

किताबें मँगवाने के लिए सम्पर्क करें

1/4649/45बी, गली न. 4, बुद्ध बाजार,
न्यू मॉडर्न शाहदरा, मण्डोली रोड, दिल्ली-110032
ई-मेल : gargiprakashan15@gmail.com
वेबसाइट : www.gargibooks.com
फोन : 9810104481

नोट :

(1) 1000 रुपये तक की किताबें मँगवाने पर 20 प्रतिशत की छूट, डाक खर्च आपका।

(2) 1000 से 2000 रुपये तक की किताबें मँगवाने पर 20 प्रतिशत की छूट, डाक खर्च हमारा।

(3) 2000 रुपये से अधिक की किताबें मँगवाने पर 25 प्रतिशत की छूट, डाक खर्च हमारा।

(4) 20 रुपये से कम मूल्य की पुस्तिकाओं पर कोई छूट नहीं।

उद्देश्य

हम ऐसे साहित्य के प्रकाशन, वितरण और प्रचार-प्रसार के लिए कटिबद्ध हैं जो:

- सत्ता और उसके सिपहसालारों द्वारा फैलाये जा रहे हर प्रकार के झूठ और दुष्प्रचार को बेनकाब करे।
- समाज की बुनियादी समस्याओं का विश्लेषण करे और उसके समूल निवारण का मार्ग प्रशस्त करे।
- समाज में तर्कपरकता, वैज्ञानिक चिन्तन, जनपक्षधर मूल्यों और श्रम की गरिमा को स्थापित करे।
- धार्मिक पुनरुत्थानवाद और हर प्रकार की संकीर्णता के वास्तविक राजनीतिक चरित्र को उजागर करे और उनके आर्थिक आधारों की कारगर आलोचना प्रस्तुत करे।
- मध्ययुगीन मूल्य-मान्यताओं और रुढ़िवादिता का विरोध करे और अपने अतीत के प्रति इतिहास-सम्मत दृष्टिकोण का प्रसार करे।
- जात-पात, नस्ल, धर्म आदि सभी प्रकार के भेदों के खिलाफ चेतना विकसित करे।
- सूचना तन्त्र पर राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय थैलीशाहों के गठबन्धन के कब्जे की रचनात्मक मुखालफत करे।
- जीवन से अभिन्न रूप से जुड़ी, सारगर्भित सामग्री उपलब्ध कराये, जिससे समाज में स्वस्थ साहित्य की चाहत पैदा हो तथा परिवर्तनकामी संस्कृति और सौन्दर्यबोध के बीज रोपे जा सकें।

पुस्तक मँगाने, पत्र-व्यवहार और सुझाव आदि के लिए सम्पर्क करें:

1/4649/45बी, गली न० –4, न्यू मॉडर्न शाहदरा, दिल्ली–110032

e-mail: gargiprakashan15@gmail.com 9810104481

www.gargibooks.com